पिछड़े बालकों के प्रकार

(Types of Backward Children)

पिछेड़े बालकों के विभिन्न प्रकार निम्न हो सकते हैं—

(अ) निष्क्रिय छात्र (Dull Pupils) : ऐसे छात्रों के पिछड़ेपन का कारण बुद्धि की कमी होती है।

(ब) सामान्य रूप से पिछड़े बालक (Generally Backward Pupils) : इस प्रकार के छात्र वास्तव में निष्क्रिय (dull) नहीं होते लेकिन विषम परिस्थितियों के कारण वह अपने कार्य में सामान्य बालकों की अपेक्षा पिछड़ जाते हैं।

(स) विशिष्टतया पिछड़े बालक (Specially Backward Pupils) : इस प्रकार के छात्र किसी विषय में पिछड़ जाते हैं जबकि उनकी बुद्धि का स्तर दूसरे छात्रों के समान सामान्य होता है। एक छात्र विज्ञान में कमजोर हो सकता है जबकि रही छात्र दूसरे विषयों में प्रतिभाशाली समझा जाता है। इस प्रकार के पिछड़ेपन को दूर करना सामान्य पिछेड़पन की अपेक्षा कहीं अधिक आसान है। छात्र की दूसरे विषयों

Scanned with CamScanner

में अच्छी उपलब्धि (Achievement) उसमें आत्मविश्वास एवं प्रेरणा को जन्म देती है। इस प्रकार
पिछड़ेपन का सम्बन्ध केवल विज्ञान अध्यापक से ही है। विषम समस्याओं को अलग से दूसरी कक्षा
में हल किया जा सकता है।

एक दूसरा वर्गीकरण (An other Classification) :

दूसरे वर्गीकरण के अनुसार मन्द बुद्धि बालकों (Feeble minded) को निम्न तीन समूहों
विभाजित कर सकते हैं—

(अ) जड़मति (Idiots)— इन छात्रों की बुद्धिलब्धि अधिक से अधिक 25 तक होती है। सब
व्यावहारिक कार्यों की दृष्टि से वे असहाय होते हैं। वे अपनी देखभाल नहीं कर सकते। अक्सर वे स्व
खाने या कपड़े पहनने लायक भी नहीं होते। वे अपने आप को साफ नहीं रख सकते और न अपनी र
ही कर सकते हैं। कभी-कभी उनमें से कोई एकाध काफी निकट देख-रेख होने पर कुछ सीमा तक अप
देखभाल कर सकता है। उन्हें कतई शिक्षा नहीं दी जा सकती और न ही कोई उपयोगी प्रशिक्षण दि
जा सकता है।

(ब) मूढ़ (Imbeciles)— इनकी बुद्धिलब्धि 26 से 49 तक होती है। उन्हें देख-रेख और शि
की बहुत आवश्यकता होती है। धैर्यपूर्वक अधिक समय तक तथा बार-बार की पुनरावृत्ति से बहुत स
कामों को वे सीख लेते हैं और उनके द्वारा अपनी कुछ आवश्यकताओं की देख-रेख कर लेते हैं औ
दूसरों के निरीक्षण में बहुत सादी हाथ की मेहनत कर लेते हैं जिसके लिये न्यूनतम गति से अधिक क
करने की जरूरत नहीं होती।

(स) क्षीण बुद्धि (Morons) – इस प्रकार के बालकों की बुद्धिलब्धि 50 से 75 तक होती है
कठिनाई से एवं बार-बार की पुनरावृत्ति से वे प्रारम्भिक पठन, लेखन, अक्षर ज्ञान एवं अंकगणित की कु
मात्रा सीख सकते हैं। उन्हें कौशल (Skill) के कार्य में और कुछ मामलों में अर्धदक्ष (Semi-Skilled
काम में भी प्रशिक्षित किया जा सकता है किन्तु उन्हें साधारण से अधिक देख-रेख की आवश्यकता हो
है। स्कूल की जनसंख्या का लगभग 5 प्रतिशत भाग ऐसा होता है जिसकी बुद्धिलब्धि 75 से नीची हो
है तथा जो स्कूलों के लिये एक बड़ी समस्या बने रहते हैं।

पिछड़े बालकों की विज्ञान सम्बन्धी समस्यायें :

(Scientific Problems of Mentally Retarded Children) :

1. वह स्मरण शक्ति कमजोर होने के कारण वैज्ञानिक ज्ञान को शीघ्रता से ग्रहण करने में कठिन
अनुभव करता है।

2. विज्ञान के प्रति रुचि एवं उचित दृष्टिकोण के अभाव में उसकी उपलब्धि (Attainment) नि
स्तर की होती है।

3. कक्षा का उदासीन वातावरण उसे कक्षा छोड़ने के लिये बाध्य करता है जिससे उसकी आगे
पढ़ाई का क्रम टूट जाता है। परिणामस्वरूप, उसकी रही-सही रुचि भी समाप्त हो जाती है।

4. परिवार का निम्न सामाजिक-आर्थिक (Socio-Economic) स्तर होने की वजह से वे सम्
पाठ्य सामग्री जुटाने में असमर्थ रहते हैं। परिणाणस्वरूप, कक्षा के अन्य बालकों के साथ-साथ वे प्रग
नहीं कर पाते हैं। दूसरे, उन्हें अपने माता-पिता के कार्यों में भी हाथ बँटाना पड़ता है।

5. माता-पिता के अशिक्षित होने की वजह से उन्हें सही निर्देश नहीं मिल पाता।

6. घरेलु झगड़े उनकी पढ़ाई में बाधक सिद्ध होते हैं।

Scanned with CamScanner